डा० आभा गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर-हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी-वाराणसी विषय - हिन्दी
नई शिक्षा नीति - २०२० बी.ए.- प्रथम सेमेस्टर (मेजर)
शीर्षक - जयशंकर प्रसाद : छायावादी कवि

स्वघोषणा - यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक / वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतया
प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे। और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है ।

"जयशंकर प्रसाद : छायावादी कवि"

जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1998 में काशी में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू देवी प्रसाद था। इनके परिवार में प्राय: सभी विद्या प्रेमी थे। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा कशी के क्वींस कालेज में हुई थी। पारिवारिक समस्याओं के कारण इनकी शिक्षा में बहुत व्यवधान पड़ा फिर भी इन्होंने घर पर ही अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी आदि का अध्ययन कर योग्यता प्राप्त की ।

कृतियाँ –
काव्य संग्रह– चित्राधार, कानन कुसुम, करुणालय प्रेम पथिक, लहर, आंसू, झरना, कामायनी आदि।

नाटक –
ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, एक घूँट, जन्मेजय का नागयज्ञ आदि।

कहानी संग्रह –
प्रतिध्वनि, छाया, आकाशदीप, आंधी तथा इन्द्रजाल

उपन्यास –
तितली, कंकाल और इरावती ।

निबन्ध –
काव्य और कला ।

कविवर जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार है। वे छायावाद के उन्नायक थे, अत: छायावादी काव्य कला की सम्पूर्ण विशेषताएँ उनकी काव्य में समाहित है। उनके काव्य की विशेषताएं निम्नलिखित है –

1. मानवता वादी दृष्टिकोण – छायावादी काव्य में मानव का महत्व सर्वोपरि है। प्रसाद जी के काव्य में मानव समानता विश्व बन्धुत्व करुणा आदि के भाव सर्वत्र दिखाई पड़ता हैं वे मानव के प्रति अटूट श्रद्धा रखते थे।

2. सौन्दर्य भावना – प्रसाद जी प्रेम एवं सौंदर्य के कवि है। छायावादी कवियों का सौंदर्य दर्शन वासना रहित है ।

3. वेदना एवं करुणा का निरूपण – छायावादी कवि पीड़ा से प्रेम रखते हैं इसलिए इन्होंने मानवीय करुणा और पीड़ा-बोध को रचनात्मक रूप से स्वीकार किया। प्रसाद ने अपनी रचना 'आँसू' में संसार भर की पीड़ा को व्यक्त किया है।

4. रहस्यात्मकता- प्रसाद काव्य में रहस्यवादी भावना का सुन्दर चित्रण हुआ है। प्रकृति के विभिन्न उपकरणों में उस असीम की सत्ता का आभास सभी को हुआ।

5. काल्पनिकता – छायावादी कवियो की प्रमुख विशेषता में काल्पनिकता भी है। प्रसाद जी ने स्वयं लिखा है – "हाँ कामायनी की कथा श्रृंखला मिलाने के लिए कहीं कहीं थोड़ी बहुत कल्पना को भी काम में ले आने का अधिकार मैं नहीं छोड़ सका हूँ।"[1]

6. नारी के प्रति दृष्टिकोण - छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने नारी महत्ता को विशेष स्थान दिया है। उन्होंने उसके महत्व का गुण-गान अपनी रचनाओं में किया। इनकी रचनाओं में नारी भोग्या न होकर मनुष्य को प्रेरणा प्रदान करने वाली है। इसलिए उन्होंने कहा है-

"नारी तुम केवल-श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में ।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में ।"[2]

7. प्रकृति प्रेम - छायावाद युग में ही प्रकृति की व्यापकता दिखाई पड़ती है। प्रकृति के मनोरम चित्र उपस्थित है। प्रसाद भी प्रकृति की ओर आकर्षित होते हैं। उनकी कविताओं में जहाँ एक ओर प्रकृति के सुन्दर चित्र उपस्थित हुए है वही दूसरी ओर विनाशकारी एवं भयंकर रूप भी चित्रित हुए है।

8. भाषा - प्रसाद जी की काव्यभाषा संस्कृतनिष्ठ, व्याकरण सम्मत एवं परिष्कृत खड़ी बोली है। इनकी रचनाओं में उपमा, रूपक, मानवीकरण, विशेषण विपर्यय आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। सवैया एवं कवित्त छंदों का प्रारम्भ में प्रयोग हुआ है परन्तु बाद में गीत-शैली एवं अतुकांत छंद में काव्य रचना की ।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद सिर्फ छायावाद के प्रवर्तक ही नहीं बल्कि उन्नायक एवं पोषक कवि भी है ।

सन्दर्भ सूची-

1. हिन्दी गाइड - नन्दलाल सच्चिदानन्द शुक्ला
2. कामायनी - जयशंकर प्रसाद